नीरजाल - गांवों में जल परीक्षण का अनुकरणीय मॉडल

भारत डोगरा

यदि दूर-दूर के गांवों के जल स्रोतों का परीक्षण समय-समय पर होता रहे व इन विभिन्न जल स्रोतों से उपलब्ध जल की गुणवत्ता की जानकारी गांववासियों को मिलती रहे, तो इससे यह सुनिश्चित करने की संभावना काफी बढ़ जाती है कि गांववासी दूषित या अपेय जल नहीं पीएंगे। इस तरह जल-जनित बीमारियों व स्वास्थ्य समस्याओं को काफी कम किया जा सकता है। पेयजल व्यवस्था सुधारने में इस तरह की विस्तृत व प्रमाणिक जानकारी से मदद मिलेगी।

इस तरह का एक अनुकरणीय प्रयास राजस्थान के 163 गांवों में हो रहा है। ये गांव अजमेर ज़िले के सिलोरा व जवाजा ब्लॉक व जयपुर ज़िले के दूधू ब्लॉक में स्थित हैं। 'नीरजाल' नाम से चर्चित इस परियोजना को समाज कार्य एवं अनुसंधान संस्थान के बेयरफुट कॉलेज ने क्रियान्वित किया है।

इस प्रयास का पहला महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि किसी बड़े विशेषज्ञ या महंगी प्रयोगशाला पर निर्भरता कम करते हुए गांववासियों को ही पानी परीक्षण के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इस समय यह भूमिका मुख्य रूप से दो युवाओं नंदलाल व रामकरण ने संभाली हुई है। उन्होंने बताया कि वे पानी की गुणवत्ता को कुल घुलित ठोस पदार्थ (टीडीएस), अम्लीयता (पीएच), फ्लोराइड, क्लोराइड, कठोरता, नाईट्रेट व ऑयरन के टेस्ट के आधार पर परखते हैं। इस तरह के टेस्ट 163 गांवों के सभी सार्वजनिक जल स्रोतों में वर्ष में तीन बार, गर्मी, सर्दी, वर्षा में किए जाते हैं।

ये टेस्ट करने के लिए वे एक मोबाइल व साथ में वे पानी का सैंपल लेने के लिए बोतलें ले जाते हैं। लगभग 1200 सार्वजनिक जल स्रोतों से पानी की गुणवत्ता का परीक्षण करते हैं। बाद में वे गांव में लौटकर गांववासियों को इस बारे में जानकारी देते हैं कि परीक्षण में क्या पाया गया व किसी जल स्रोत का पानी पीने योग्य है या नहीं। यह जानकारी गर्मी, सर्दी व वर्षा की स्थिति के अनुसार बदलती भी रहती है।

सैंपल लेने व परीक्षण करने के कार्य में वे अन्य गांववासियों, विशेषकर युवाओं व विद्यार्थियों, को भी प्रशिक्षित करने का प्रयास करते हैं। हालांकि इनमें से कुछ गांववासी तो कुछ समय बाद इस प्रशिक्षण को भूल भी जाते हैं, पर कई लोग इसे याद रखते हैं व समय-समय पर इस कार्य में सहयोग करते हैं। इस तरह धीरे-धीरे इन गांवों में जल परीक्षण की तकनीकी जानकारी रखने वाले कई लोग तैयार हो गए हैं व जल परीक्षण के महत्त्व को अधिक व्यापक स्तर पर समझा जा रहा है। जल संकट वाले कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां ऐसी जानकारी का बहुत महत्त्व है। उदाहरण के लिए सांभर झील, खारे पानी की झील (जिससे नमक बनाया जाता है) के आसपास के गांवों के पानी में लवण व खारापन अधिक होने के कारण जल संकट बहुत गंभीर है व वहां ऐसी जानकारी बहुत उपयोगी है। वहां मंथन संस्था के कुछ कार्यकर्ताओं की बेयरफुट कॉलेज की नीरजाल टीम ने जल परीक्षण का प्रशिक्षण दिया है।

इसके अंतर्गत भूजल स्तर के बारे में भी जानकारी एकत्र की जाती है। गिरते भूजल को संभालने के लिए नीरजाल के कार्यकर्ता गांवों की यात्राओं के दौरान जल संरक्षण, संग्रहण व वाटर हार्वेस्टिंग का प्रचार-प्रसार भी करते हैं।

नीरजाल का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि पानी का सैंपल एकत्र कर व उसका परीक्षण कर जो भी जानकारी एकत्र की जाती है उसको कंप्यूटर में फीड किया जाता है। इसके लिए विशेष तौर पर सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है। इस तरह प्राप्त 'जलचित्र' के माध्यम से बहुत आसानी से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है कि 163 गांवों में फैले इस क्षेत्र में व इसके विभिन्न मोहल्लों व बस्तियों में

विभिन्न जल स्रोतों की मौजूदा स्थिति क्या है व इस स्थिति को सुधारने के लिए किस तरह के प्रयासों की ज़रूरत है। इस तरह बेहतर से बेहतर जल नियोजन संभव बनाने के लिए नीरजाल से आधार प्राप्त होता है।

पेयजल सम्बंधी ज़रूरी जानकारी को कंप्यूटर में फीड करने की ज़िम्मेदारी भी दो ग्रामीण महिलाओं ललिता व शारदा देवी को ही दी गई है जो बेयरफुट कॉलेज की इस सोच के अनुरूप है कि ग्रामीण प्रतिभाओं को खिलने का भरपूर अवसर मिलना चाहिए। ललिता व शारदा देवी ने इस ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाया भी है।

'नीरजाल' ने जल परीक्षण करने व जल सम्बंधी जानकारी को गांववासियों की भागीदारी से एकत्र करने व इसके परिणाम उन्हें उपलब्ध करवाने का एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत किया है जिसमें गांववासियों की भरपूर भागीदारी है व यह मॉडल अपेक्षाकृत सस्ता भी है। इसके व्यापक प्रसार से क्षेत्रीय जल नियोजन में काफी सुधार हो सकता है। इसकी अभी कुछ सीमाएं हैं। जैसे यह जल सम्बंधी सभी जानकारियों को एकत्र नहीं करता है। इन सीमाओं के बावजूद इस प्रयास की उपलब्धियां उत्साहवर्धक हैं और इससे अन्य क्षेत्रों में ऐसे प्रयासों के लिए बहुत कुछ सीखा जा सकता है। 'नीरजाल' को विकसित करने में बेयरफुट कॉलेज के साथ 'ग्लोबल रेनवाटर हार्वेस्टिंग कलेक्टिव' व 'डिजिटल एम्पॉवरमेंट फाउंडेशन' का भी योगदान रहा है। ***(स्रोत फीचर्स)***